Research Paper Medical Science

मुरारीलाल त्यागी के चिन्ता से चिन्तन तक निबंध संग्रह में कथ्य

ममता | (एम० ए० हिन्दी) नेट मकान नं० 229/18 द्विव कॉलोनी, जीन्द (हरियाणा)

KEYWORDS

मुरारीलाल त्यागी एक कुशल उपन्यासकार, आत्मकथाकार, सम्पादक समीक्षक होने के साथ-साथ प्रसिद्ध सफल निबन्धकार है । 'चिन्ता से चिन्तन तक' उनका सफल निबन्ध संग्रह है । उनके निबन्धों से समाज की राजनैतिक, सामाजिक, ध ार्मिक, सांस्कृति, आर्थिक परिस्थिति का बोध हो जाता है ।

हिन्दी गद्य साहित्य की विधाओं में 'निबंध' एक महत्त्वपूर्ण, गौरवपूर्ण एवं सशक्त विधा है । लेखक के संपूर्ण व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति निबन्धकला में ही सर्वाधिक मुखरित हो सकती है और उसकी शैली का पूर्ण विकसित रूप भी निबंध से लक्षित होता है । निबंध में बुद्धि तत्व और शैली तत्व की प्रधानता रहते हुए भी इस तत्व तथा कल्पना तत्व का समावेश रहता है ।"1

परिभाषाएँ :
अनेक पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने 'निबंध' की परिभाषाएं दी है जिनमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार, निबंध उसी को कहना चाहिए, जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता हो । बात तो ठीक है, यदि ठीक तरह से समझी जाए । व्यक्तिगत विशेषता का यह मतलब नहीं कि उसके प्रदर्शन के लिए विचार की शृंखला रखी ही न जाए, भावों की विचित्रता दिखाने के लिए ऐसी अर्थ योजना की जाए, जो उनकी अनुभूति से प्रकृत या लोक-सामान्य स्वरूप से कोई संबंध ही न रखे अथवा तमाशा दिखाने के सिवाय और कुछ न हो ।"2

बाबू गुलाबराय निबंध की समस्त विशेषताओं को समाहित करते हुए उसे इस प्रकार परिभाषित करते हैं- "निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और संजीवता तथा आवश्यक संगति और संबद्धता के साथ किया गया हो ।"3 डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के अनुसार : "निबंध लेखक मत का प्रतिपादन नहीं करता, सिद्धान्त स्थिर नहीं रहता । वह मनोनीत विषय को अपने व्यक्तित्व से रस को पगाकर प्रकट करता है । यह विषय का अध्ययन करके नहीं लिखता । वह पाठक के साथ आत्मीयता स्थापित करता है ।"4 डॉ० जयनाथ 'नलिन' के अनुसार : "निबंध गद्य काव्य की वह मर्यादित विध ा है जिसमें लेखक के स्वाधीन चिंतन और निश्छल अनुभूतियों की सरल छवि अभिव्यक्ति होती है ।"5 डॉ० ओंकारनाथ शर्मा ने निबंध को परिभाषित करते हुए लिखा है : "निबंध वह लघु मर्यादित साहित्य-विद्या है, जिसमें निबंधकार विषयानुसार अपने हृदय-स्थित, भावों, अनुभूतियों तथा विचारों का कलात्मक चित्रण वैयक्तिकता के साथ प्रदर्शित करता है।"6

त्यागी जी के 'चिन्ता से चिन्तन तक' निबंध संग्रह में कथ्य :
'निबंध' ऐसी विधा है जो लेखक की प्रौढ़तम प्रतिभा की सृष्टि होती है और लेखक की सम्पूर्ण क्षमताओं की परिचायक भी । इस सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ठीक ही कहा है- "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है, भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंध ों में सबसे अधिक सम्भव होता है।"7 निबंध किसीवस्तु के स्वरूप, प्रकृति, गुण-दोष आदि की सृष्टि से लेखक की प्रबलतम गद्यात्मक अभिव्यक्ति होती है । डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा के अनुसार निबंध में- "निबंधकार आत्मीयता या अनात्मीयता वैयक्तिकता या निवैयक्तिकता के साथ किसी एक विषय या उसके किन्हीं अंशों पर प्रसंगों पर अपनी निजी भाषा-शैली में भाव या विचार प्रकट करता है।"8 त्यागी जी के निबंध संग्रह चिन्ता से चिन्तक तक निबंध का कथ्य इस प्रकार है :

व्यंग्य की प्रधानता :
मुरारी लाल त्यागी इस युग के प्रबुद्ध निबन्धकार है । उनके सभी निबंध प्रेरण ादायक है । इनके निबंधों में सामाजिक समस्याओं को उठाया है । विषय का वैविध्य और उनमें सहज विनोद की मनोवृत्ति इनके निबंध-साहित्य का उज्जवल भविष्य निर्देशित करती है । अपने निबंधों के माध्यम श्री त्यागी ने तथाकथित सुसभ्य एवं सुसंस्कृत मानव में छिपी उस संकीर्ण एवं विभाजक प्रवृत्ति पर कटाक्ष किया है, जो धर्म, भाषा, प्रदेश एवं सम्प्रदाय के नाम पर व्यक्ति के विरूद्ध मोर्चा लेने को उकसाती है। "आलाकमान ऐसे जल्लादों की अदालत है जो फैसला भी खुद करते है और फांसी पर खुद चढ़ाते है और तब तक रस्सी खींचते है जब तक उस व्यक्ति की आत्मा, दिल, दिमाग प्रतिष्ठा सब समाप्त न हो जाए।"9

व्यक्ति अपने धर्म को भूल गया और उसने भौतिक वस्तुओं की ओर रूप किया- "मनुष्य ने गलत राह पकड़ी, कर्मों में विकृति आई और मनुष्य के कदम चले अशान्ति की ओर । स्वधर्म को भूलकर मनुष्य देह-धर्म की ओर प्रवृत्त हुआ । वैदिक आकर्षण ने उसे वासनाओं के अंधेरे कुएं में धकेल दिया और जड़मति व्याकुलता का आभास हुआ।"10

आज जब हर व्यक्ति, हर समुदाय, हर भाषा, हर प्रदेश मानवीय मूल्यों का रक्षक है, बंधुत्व का प्रचार प्रसार करना चाहता है, अन्याय, अत्याचार और अविश्वास की जड़ को मिटाना चाहता है, तो फिर उनमें आपस में तालमेल क्यों नही ? एक लक्ष्य होने के बावजूद भी उनके हृदय कठोर, असहिष्णु क्यों होता जा रहे है ? शांति-संदेश हिंसा के चौराहे पर दम तोड़ देते है "कांग्रेस और भाजपा में राजनीतिक शत्रुता है । यही कारण है कि टास्क फोर्स के नाम पर दिल्ली में अनाधिकृत बस्ती बसाकर अब उनके घर उजाड़े जा रहे है । आश्चर्य की बात तो यह है कि दिल्ली में कांग्रेस ने अपनी थैलियां भरने के लिए दलालों के द्वारा सारी दिल्ली को बेच डाला ।"11

कथनी और करनी में अंतर :
देश के दिग्गज नेता जनता को केवल गुमराह करते हैं । जनता के सामने दूसरी पार्टियों से नाता तोड़ने की बात करते है । जनता को विपक्ष के खिलाफ भड़काते रहते है । मगर स्वयं उन्हीं से अपने काम निकलवाते रहते हैं "श्री मतह सुचेता कृपलानी समाजवादी पार्टी से थी और जवाहरलाल नेहरू को आम सभा में जमकर गालियां, बुरा-भला सुनाती मगर वह नेहरू को आम सभा में जमकर गालियां, बुरा-भला सुनाती मगर वह नेहरू से ही अपने सारे कार्य करवाती "देखिए, ये मेरे वर्कर हैं, काम हो जाना चाहिए ।" उधर से जवाहरलाल नेहरू जी चुटकी लेते- "काम तो हो ही जाएंगे पर यह तो बताइए कि आज मुझे कितनी गालियाँ दी है दिन-भर में ? " और फोन पर हंसी के फव्वारे छूटने लगते ।"12

राजनीतिज्ञ देश को खंड़ों में बांटने में ही लगे है "भारत के छोटे-छोटे दलों ने देश के खंड़ों में बांटा, जातिवाद के दलदल में फंसाया और कुर्सियाँ हथियाने के लिए बार-बार चुनाव की भट्टी में देश को झोंक दिया ।"13 आज के राजनेता मीठी जुबान से भरे हैं । उनकी करनी और कथनी से जमीन आसमान का अन्तर है, जनता को भ्रम में रखना ही इनका उद्देश्य हो गया है ।

जनता के सामने राजनेति पार्टियों से दुश्मनी का दिखावा करते है, मगर असलियत में कुछ और ही होता है, "स्व. प्रकाशवीर शास्त्री कहा करते थे कि "राजनीतिक से दुश्मनी कच्ची होती है और दोस्ती पक्की । मै तो कहता हूँ कि दुश्मनी होती ही कहाँ है ? दुनियां को दिखाने के लिए तोवे दुश्मनों की भांति एक दूसरे से वाक् युद्ध करते है, किन्तु बाहर गले मिलते है ।"14

स्वार्थ से भरे राजनेता को आम जनता के दु:ख दर्द से कोई लेना देना नहीं होता "जगमोहन जी ने गरीबी नहीं देखी । भूख से पाला नहीं पड़ा, झोपड़ी का दर्द नही जाना । लोगों ने बच्चों का पेट-काटकर सिर छिपाने के लिए जो स्थान बनाए, 'उन्हें उजाड़ना कहाँ की अक्लमंदी है? उन पर बुलड़ोजर चलवाकर उन्होंने किस बहादुरी का परिचय दिया है ।"15

भारतीय संस्कृति :
श्री मुरारी लाल त्यागी के निबंधों में सांस्कृतिक और नैतिक तत्त्वों का समावेश है । श्री त्यागी भारतीय संस्कृति के उपासक रहे है किन्तु उनमें अन्य संस्कृतियों के प्रति अनादर नही है । उनकी सांस्कृतिक चेतना सम्प्रदाय या राष्ट्र क सीमाओं में बद्ध नहीं है । उनकी धारणा है कि पूरे विश्व में सांस्कृतिक व नैतिक चेतना का प्रचार-प्रसार हो । विश्व में भाई-बंधुत्व का विकास हो । त्यागी जी के निबंधों में संस्कृति के विविध तत्त्व बीज रूप में बिखरे पड़े है "परिवार स्नेह के सूत्र में बंधा हो तो वह एक गुलदस्ता है । गुलदस्ते की शोभा उसकी विविधता ही है । यदि गुलदस्ते में एक ही रंग-रूप के पुष्प बांध दिए जायें तो वह उतना शोभनीय नही होगा । परिवार में भी विभिन्न विचारों और संस्कारों के सदस्य उसकी शोभा है ।16

उनके निबंधों में देश के लिए एकजुट होकर कार्य करने का संदेश दिया गया है । दया व प्रेम जैसे नैतिक गुणों को अपनाने पर त्यागी जी ने जोर दिया है "दया को धर्म व मानवता का मूल कहा गया है । जहाँ दया व प्रेम है, वहां मानव महानता के पथ पर कदम बढ़ाता है । जहां दया नही, क्रूरता है, वह मनुष्य, मनुष्य न होकर हिंसक पशु-तुल्य है ।"17 धैर्य और साहस हमारी संस्कृति की देन है :

"एक कण भी जल न ही माँगा कभी
प्यास चाहे थी समुंदर से बड़ी
सैकड़ों आकर्षणों के बीच में
जिद नही टूटी, रह फिर भी अड़ी ॥"[18]

हमारे देश में गाय को माता कहकर उसकी पूजा की जाती है । समय-समय पर गौवध को लेकर देश में आंदोलन चलने रहे है । हमारी सरकारों ने कहने को तो बड़ी-बड़ी गौशालाएँ खोली बड़े-बड़े वायदों पर जोर दिया । मगर उनके लिए कोई सुविधा नही जुटाई । त्यागी जी ने अपनी निबंधों में राजनीतिज्ञों व सरकार पर कटाक्ष किया है "कभी गांधी ने तो कभी विनोबा ने, तो कभी हिन्दू समाज ने गौ-भक्ति का खूब ढिंढोरा पीटा और जब से दिल्ली में भाजपा की सरकार आई तब से बड़ी-बड़ी गौशालाएँ खोली गई, लेकन उनमें गऊओं के लिए कोई सुविधा नहीं जुआई गई ।"19

शिक्षा और राजनीति :
त्यागी जी ने अपने निबन्धों में शिक्षा प्रणाली में राजनैतिक हस्तक्षेप को सर्वथा गलत मानते हुए उस पर करारा व्यंग्य किया है । साथ ही सरकारी शिक्षण-संस्थानों की दोषपूर्ण कार्यप्रणाली को भी उजागर किया है। शिक्षा निदेशालय की योजनाएँ मात्र कागजों में ही चलती है । इस का यथार्थ वर्णन भी त्यागी जी ने अपने निबंधों में खुलकर किया है । विद्यार्थियों के कल्याण के लिए शिक्षा निदेशालय के पास अनेक योजनाएँ है जिनमें से अधिकांश अव्यवहारिक है "शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यक वर्ग के बच्चों को छात्रवृत्ति देने को योजना की अन्तर्गत एक पैसा भी व्यय नहीं हुआ । इसी प्रकार की कितनी योजनाएं है जो सिर्फ कागजों पर ही चल रही है । इन्हें बदलने की कोई आवश्यकता शिक्षा निदेशालय महसूस नहीं करता ।"20

शिक्षा का कार्य भी आई.एस.एस. व पी.सी.एस. अधिकारियों को सौपा जाता है । जिनको शिक्षा और उसकी प्राथमिकताओं की बिल्कुल जानकारी व रूचि नहीं है । शिक्षा अधिकारियों के साथ भी भेदभाव बरता जाता है ।

"यदि आप पुराना सचिवालय जाएं तो आप देखेंगे कि सभी आई.ए.एस. और पी.एस. अधिकारियों के कमरे कंडीशन, फाल्स सीलिंग, कारपेट, उत्तम फर्नीचर, अच्छे बाथरूम आदि से सुसज्जित है, जबकि शिक्षा निदेशक जैसे शैक्षणिक अधिकारी के कूलर मेंपानी भरने की व्यवस्था भी नहीं है । शौचालय के लिए उन्हें बाहर जाना पड़ता है।"21 त्यागी जी ने सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति पर करारा व्यंग्य किया है । "इतने भवन, अफसरों की लंबी-चौड़ी फौज, मंत्री और मंत्री के कार्यालय के खर्च सब सफेद हाथी बनकर रह गए है । सरकारी स्कूलों को अनाथालय ही कहना उचित होगा ।"22

शिक्षा विभाग की तरफ से जो कम्प्यूटर या टी.वी. सैट सरकारी स्कूलों को दिए जाते है उनकी दुर्दशा ही होती है । इससे ज्यादा कुछ नहीं "पहले-पहल जिन स्कूलों में टेलीविजन दिए गए, वे या तो स्टोरों में बंद कर दिए गए और धूल-मिट्टी चढ़ती रही या फिर किसी प्रिंसीपल या अध्यापक के घर की शोभा बढ़ाते रहे है । बच्चों को उसके उपयोग का लाभ ही नहीं हुआ ।"23

नैतिकता :
त्यागी जी के निबंधों में अच्छा और तनावमुक्त जीवन व्यतीत करने पर बल दिया गया है । इसके लिए उन्होंने व्यक्ति की कटुता, क्रोध, अहंकार, तनाव, भय, ईर्ष्या इत्यादि से दूर रहने की सलाह दी है।

"मन का तनाव ही सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत समस्याओं का भी मूल कारण बन जाता है । प्रत्येक घर में कम से कम एक प्राणी तो ऐसा होता ही है जो कईयों के मन में तनाव पैदा करता है।24

उन्होंने जीवन को हार-जीत का खेल माना है "इस विशाल विश्व के रंगमंच पर हम सब मनुष्यताएँ कलाकार है । हमारा जीवन हमारे लिए एक खेल है । हार-जीत, सुख-दु:ख व लाभ-हानि के इस खेल में हमें निरन्तर प्रसन्न रहना है ।"25

व्यसनों के कारण अनेक घर-बर्बाद हो रहे हैं, बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ हो रहा है । त्यागी जी ने इस पर एक चिन्ता व्यक्त की है ।

उन्होंने व्यक्ति को बीते पलों को याद करके रोने की बजाए उन्हें भूलकर शान्ति के जीवन जीने पर बल दिया है "सोचना इस प्रकार चाहिए कि जो होना था वह हो गया, अब रोने से वह ठीक नहीं होगा। सभी को यह भी ज्ञात रहे कि जो हो गया, वह भी सत्य था और जो हो रहा है वह भी सत्य है । इसलिए यों ही अशान्त रहकर जीवन को दुखी न करें ।"26

त्यागी जी ने व्यक्ति को क्रोध से दूर रहने की सलाह दी है क्योंकि "जब क्रोध प्रारम्भ होता है तो बुद्धि को मूढ़ कर देता है जब मनुष्य क्रोध की ज्वाला में जलता है तो अपशब्दों का प्रयोग बनता है, जब क्रोध शान्त होता है तो वह पश्चाताप की अग्नि में जलता है तो वह क्रोध महाशत्रु, आदि, मध्य, अन्त में मनुष्य को कष्ट-क्लेश ही देता है ।27

राजनैतिक हस्तक्षेप :
भाजपा के समय में गैर-जिम्मेदाराना नेता, अडियल महिलाओं व अक्खड़ अकाली के जमघट के कारण अटल जी उन्हें मनाने में लगे रहे ऐसे में देश की समस्याओं को बढ़ावा ही मिला । "कभी नदियों की समस्या, तो कभी सीमाओं की समस्या, कहीं बिजली का संकट, कहीं फसलों का चौपट होना । इन्हीं से सरकार जूझती रहे तो वह काम कब करे, जनता की भलाई कब करे । देश के कल्याण की योजनाएं कैसे बनाए और पार्टी अपने काम की व्याख्या कैसे करे ।"28

अटल जी उन्हें कैसे सहन करते रहेंगे "एक दिन तो उनका आत्म-सम्मान उन्हें झकझोर रख देगा और अटल जी कह उठेंगे- यह लो अपन लकुटि-कमरिया बहुत ही नाच नचाओ ।"29

दिल्ली और हरियाणा की सरकार द्वारा बनाए कानून केवल कागजों में ही नजर आते है । इसी पर 'पानी दे दो शराब ले लो' निबंध कटु व्यंग्य किया गया है "वाह री दिल्ली सरकार, तू नियम और कानून तो बढ़िया बनाती है पर इस पर अमल कराने का कोई तरीका तलाश नहीं करती ।"

वाह री हरियाणा सरकार, तनै शराब बंद करा दी तो साथ ही दंड विधान भी दे दिया कि बच्चू तीन साल तक चक्की पिसवा दूंगा । शराब बेचता, पीता और बनाता पकड़ा गया तो ।

कितना बड़ा फर्क है दिल्ली के चौधरी और हरियाणा के चौधरी में ।30 देश की जनता भी भ्रष्टाचारी नेताओं को चुनकर संसद में भेजती है, देश की राजनीति में तांत्रिकों का भी बोलबाला है, "अपने आपको महान् तांत्रिक बताने वाला चंद्रास्वामी कहीं तो एक लाख डालर की घूस के मामले में फंसे है (लक्ख भाई ठगी प्रकरण) तो कहीं झूठे षडयंत्र केस (सेंट किड्स) ।"31

अपने तथाकथित तंत्र-मंत्र से कई बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों और व्यापारियों को अपनी उंगलियों पर नचाने वाला यह स्वामी आजकल तिहाड़ जेल में विराजमान है । कांग्रेस के समय देश व दिल्ली के दंगों के कारण आम जनता विपतियों से गिर गई मगर हमारे स्वार्थी नेता व्यर्थ की बातों में संसद का समय बर्बाद करने से बाज नहीं आए ।

निष्कर्ष :
आधुनिक युग में गद्यात्मक विधाओं में निबन्ध का विशेष महत्त्व है। आचार्य शुक्ल के अनुसार यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो बिन्ध गद्य की कसौटी हैं । निबन्ध एक गौरवपूर्ण विधा है । बाबू गुलाबराय के अनुसार "निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन एक विशेष निजीपन, स्वछंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो । वैयक्तिकता, सोद्देश्यता, कृतित्व, भावतत्त्व, कल्पना तत्त्व, संक्षिप्तता, शैली आदि निबंध के तत्त्व है । त्यागी जी ने अपने निबंधों में संकीर्णता पर व्यंग्य, कथनी और करनी में अंतर, भारतीय संस्कृति, शिक्षा बनाम राजनीति, नैतिकता, राजनैतिक हस्तक्षेप आदि मुख्य बिंदुओं के आधार पर लेखक ने निबंधों के वर्ण्य-विषय पर गंभीरता से विचार किया है । लेखक का चिंतन फलक व्यापक है । वस्तुत: त्यागी जी एक सफल एवं प्रबुद्ध निबंधकार है । उन्होंने अपने निबन्धों में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक सभी प्रवृत्तियों का मार्मिक अंकन किया है । भाषा शैली और प्रस्तुति की दृष्टि से उनके निबन्ध बेजोड़ बन पड़े हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ० बाबूराम, हिन्दी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, पृ० 15
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, साहित्य का इतिहास, पृ० 605
3. गुलाबराय, काव्य के रूप, पृ० 221
4. डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिंदी गद्य की प्रवृतियाँ, पृ० 18
5. डॉ० जयनाथ 'नलिन', हिन्दी निबन्धकार, पृ० 10
6. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 505
7. प्रधान सं०, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश भाग-1, पृ० 408
8. मुरारीलाल त्यागी, चिन्ता से चिन्तक तक, पृ० 118
9. वही, पृ० 56
10. वही पृ० 114
11. वही, पृ० 110
12. वही, पृ० 29
13. वही, पृ० 110
14. वही, पृ० 151
15. वही, पृ० 101
16. वही, पृ० 146
17. वही, पृ० 160
18. वही, पृ० 155
19. वही, पृ० 154

20. वही, पृ॰ 154
21. वही, पृ॰ 157
22. वही, पृ॰ 157
23. वही, पृ॰ 158
24. वही, पृ॰ 11
25. वही, पृ॰ 15
26. वही, पृ॰ 57
27. वही, पृ॰ 144
28. वही, पृ॰ 150
29. वही, पृ॰ 106
30. वही, पृ॰ 155
31. वही, पृ॰ 156